सन्मार्ग

अध्यात्म के रहस्यों को उजागर करती 'काशी मरणान्मुक्ति'

उपन्यास का नाम : 'काशी मरणान्मुक्ति', लेखक द्वय : मनोज ठक्कर व रश्मि छाजेड़, प्रकाशक : शिव ॐ साईं प्रकाशन, पता : 95/3 वल्लभ नगर, इन्दौर- 452003, मूल्य - 360 रुपये

पुस्तक समीक्षा

सद्गुरु की कृपा बड़े ही भाग्य से मिलती है तथा हरेक व्यक्ति का अपना एक विशिष्ट मार्ग होता है; क्योंकि सृष्टि के रचयिता ने, जो प्रत्येक के अंदर विद्यमान है, सबके लिए विभिन्न मार्ग निर्धारित कर रखे हैं। अध्यात्म वह गहन क्षेत्र है, जिसमें गहरे पैठने के बाद ही तत्वज्ञान हासिल होता है। गुरु की ज्ञान दृष्टि की कृपा अगर हासिल हुई तो इस कंटकाकीर्ण दुर्गम मार्ग के पथिक की राह आसान हो जाती है तथा उसे 'सहजा मिलिया ज्ञान' की चरम उपलब्धि हो जाती है, अन्यथा उसे जन्म जन्मांतर तक मोह-मायावश भटकना पड़ता है। गंभीर विचारक मनोज ठक्कर तथा सहयोगी लेखिका रश्मि छाजेड़ की लेखनी द्वारा स्फुटित उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' अध्यात्म के उसी गहन धरातल की विशद चर्चा करता है, जिसके परमानंद को हासिल करने हेतु सभी विद्वत्जन लालायित रहते हैं। महा उस प्रभु की असीम लीला का एक ऐसा महती पात्र है, जो कथित रूप से चांडाल जैसा निकृष्ट कार्य करने के बावजूद अपनी विशुद्ध भावनाओं के कारण प्रभु का अत्यंत प्रिय है तथा उसे ब्रह्मज्ञान देने के लिए कबीर, तैलंग स्वामी जैसी विभूतियों को कई बार स्वयं सामने आना पड़ता है। महा के जीवन में प्रारंभ से लेकर अंत तक तमाम विपत्तियां आती हैं किंतु स्थिरचित्त महा उन सभी आपदाओं को एक-एक कर किस प्रकार पार करता है तथा अध्यात्म की राह पर चलने वाले पथिक के जीवन में विपदाएं किन रूपों में सामने आती हैं, इसका बखूबी चित्रण चिंतक मनोज ठक्कर ने किया है। महा विभिन्न साधना पद्धतियों से गुजरते हुए अंततः किस प्रकार शिव स्वरूप हो जाता है, इसका आनंद रसज्ञ पाठक उपन्यास की पंक्तियों से गुजरते हुए उठा पाते हैं। 'काशी मरणान्मुक्ति' में अध्यात्म के उन सोपानों की भी विशद चर्चा है, जिस पर से गुजरकर इस राह के पथिक ऊर्ध्वाधार गति में यात्रा कर चरम तक पहुंचते हैं। परम कल्याणकारी शिव तथा शिवत्व की चर्चा तथा इस ज्ञान को हासिल करने वालों के लिए इस उपन्यास में काफी कुछ है, जो उनके नजरिये के लिए एक अलग द्वार भी खोलता है।

-कमलेश पांडेय